हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

वर्ल्ड लेप्रोसी डे (25 जनवरी पर विशेष) »

पूरी तरह ठीक हो सकती है यह बीमारी

लेप्रोसी यानी कोढ़ को आमतौर पर लाइलाज बीमारी माना जाता है और पीड़ित व्यक्ति के प्रति नफरत का भाव रखा जाता है। जरूरत है नजरिए में बदलाव की, क्योंकि पूरी तरह ठीक हो सकती है यह बीमारी। क्या है लेप्रोसी और क्या है इसका इलाज, आइए जानें।

लेप्रोसी यानी कोढ़ के शिकार अधिकतर वे लोग होते हैं, जो निम्न सामाजिक और आर्थिक तबके से आते हैं। इस रोग के बैक्टीरिया का संचरण व्यक्तिगत संपर्कों के कारण वायु के द्वारा होता है। इसका संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के ऐरोसॉल के द्वारा स्वस्थ्य व्यक्ति के श्वसन तंत्र में होता है।

लेप्रोसी के कारण

यह बीमारी माइक्रोबैक्टीरियम लेप्रई के कारण होती है, जो सबसे पहले तंत्रिका तंत्र पर आक्रमण करता है। इससे त्वचा और पैरों में स्थित तंत्रिकाएं विशेष रूप से प्रभावित होती हैं और इनमें सूजन आ जाती है। तंत्रिकाएं क्रियाशील नहीं रहतीं, जिस कारण उस क्षेत्र की त्वचा की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। जिन क्षेत्रों की तंत्रिकाएं प्रभावित होती हैं, वहां की मांसपेशियों की शक्ति भी धीरे-धीरे कम होने लगती है। अत्यंत भीड़-भाड़ और गंदगी इस बीमारी को फैलाने में सहायता करती है।

किनमें तेजी से फैलता है

संक्रमित व्यक्ति में इस बीमारी का फैलाव व्यक्ति विशेष के रोग प्रतिरोधक तंत्र पर निर्भर करता है। जिन लोगों का रोग-प्रतिरोधक तंत्र बेहतर होता है, उनमें इस रोग की तीव्रता कम होती है या उनके शरीर के कम क्षेत्रों की तंत्रिकाएं ही प्रभावित होती हैं। इन रोगियों की बीमारी को ट्युबरक्युलायड लेप्रोसी कहते हैं। ऐसे रोगी दूसरे व्यक्तियों के लिए संक्रमणकारी नहीं हैं। ऐसे लोग जिनका रोग प्रतिरोधक तंत्र कमजोर होता है, वह इस बीमारी को फैलाने वाले बैक्टीरिया से बेहतर तरीके से नहीं लड़ पाते। इस कारण उनमें यह बीमारी तेजी से फैल जाती है। इसे लेप्रोमैटस लेप्रोसी कहते हैं।

रोग के लक्षण

ट्युबरक्युलायड में रोगी के शरीर का एक या अधिक भाग संवेदनशून्य हो जाता है। इन भागों की त्वचा सूखी हो जाती है और वहां पिग्मेंटेशन कम हो जाता है, जिसे डॉक्टरी भाषा में हाइपो पिग्मेंटेशन कहते हैं। इससे इन भागों की त्वचा हल्के रंग की हो जाती है या कभी-कभी लाल व मोटी हो जाती है। कई बार इन स्थानों के बाल भी झड़ जाते हैं।

लेप्रोमैटस लेप्रोसी में त्वचा का अधिक भाग शामिल हो जाता है और पूरे शरीर की तंत्रिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, जिससे ये भाग संवेदनशून्य हो जाते हैं। संवेदना समाप्त होने के कारण बार-बार फोड़े होते हैं और जलन होती है, जिसका अहसास रोगी को त्वचा के संवेदना शून्य होने के कारण नहीं होता, लेकिन रोग अंदर ही अंदर बढ़ता जाता है।

(सरोज सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल के सीनियर कंसल्टेंट (डरमेटोलॉजी एंड कॉस्मेटिक सर्जरी) डॉ. अनिल गंजू से बातचीत पर आधारित)